संत टेरेसा

मदर टेरेसा, परमपिता परमेश्वर की कोमल करुणा की ऐसी प्रतिरूप थीं, जिन्होंने अपने दयालुता से भरे आध्यात्मिक तथा अन्य कार्यों के माध्यम से अनेकानेक लोगों के जीवन में साक्षात ईश्वर के प्रेमभाव की ज्योति का संचार किया।

1910 में स्कोपये, जोकि अब मैसिडोनिया का भाग है, के एक मूल अल्बेनियाई परिवार में एग्नेस गोंक्शा बोहाक्शियू के रूप में जन्मीं मदर टेरेसा, सिस्टर ऑफ लॉरेटो के तौर पर 1929 में भारत आईं। भारत आने के बाद उन्होंने शिक्षिका के तौर पर कार्य करना आरंभ किया। 24 मई, 1937 को सिस्टर टेरेसा ने फाइनल प्रोफेशन ऑफ वाउज अर्थात् अंतिम व्रत धारण किया और अपने संकल्प के अनुसार "सदा सर्वदा के लिए यीशू की संगिनी" बन गईं। इसके बाद उनका नाम मदर टेरेसा हो गया। उन्होंने सेंट मेरी स्कूल में अध्यापन कार्य जारी रखा और 1944 में इस स्कूल की प्रधानाध्यापिका बन गईं। ईश्वर की प्रार्थना और अपनी धार्मिक सिस्टर साथियों तथा अपने विद्यार्थियों के लिए गहन प्रेमभाव से भरी मदर टेरेसा ने लॉरेटो में बीस साल की अवधि अत्यंत आनंद से बिताई। अपने परोपकारी और निस्वार्थ स्वभाव, साहसी व्यक्तित्व और अथक परिश्रम करने की क्षमता तथा स्वाभाविक संगठन शक्ति के लिए वे सभी की श्रद्धेय थीं और अपने संगी-साथियों के बीच रहते हुए ईसा मसीह के प्रति समर्पण की अपनी प्रतिज्ञा को उन्होंने पूरी निष्ठा और आनंद से निभाया।

परन्तु, आस-पास की व्यापक गरीबी ने उन पर गहरा प्रभाव डाला और इसी के परिणामस्वरूप उन्होंने "द मिशनरीज ऑफ चैरिटी" नामक संघ की शुरुआत की। इस मिशन का प्राथमिक उद्देश्य ऐसे लोगों की सेवा-सुश्रूषा करना था, जिनकी देभाल करने के लिए कोई तैयार नहीं था। अपने "अंतर्मन की पुकार" सुन उन्होंने गरीबों की सेवा करने का मिशनरी काम शुरू किया और उनके इसी प्रयास ने "मिशनरीज ऑफ चैरिटी" की बुनियाद रखी।

मदर टेरेसा ने 1950 में मिशनरीज ऑफ चैरिटी का शुभारंभ किया। यह संगठन, रोमन कैथोलिक धार्मिक संघ है। वर्ष 2012 में, इस संघ में 4,500 से अधिक धार्मिक सिस्टर थीं। धार्मिक संघ के सदस्य के लिए यह अनिवार्य है कि वह शुचिता, सादगी, आज्ञाकारिता और निर्धनतम लोगों की हृदय से सेवा करने का संकल्प करे। वर्तमान में, विभिन्न देशों में इस धार्मिक संघ की ध्यान व सेवा शाखाएं हैं। मिशनरी संगठनों का उद्देश्य जरूरतमंत लोगों की देखभाल एवं सहायता करना है। यह मिशनरी संगठन बेघर बच्चों को शिक्षा प्रदान करने के लिए स्वयंसेवकों के माध्यम से स्कूल और सूप किचन (सार्वजनिक भोजनालय) चलाता है और तथा समाज सेवा के उद्देश्य से अन्य सेवाएं प्रदान करता है। मात्र कोलकाता (कलकत्ता) में मिशनरीज ऑफ चैरिटी के कुल 19 केन्द्र हैं, जिनके माध्यम से सभी वर्गों के लोगों को विभिन्न प्रकार की सेवाएं निशुल्क मुहैया कराई जाती हैं, भले ही वे किसी भी धर्म अथवा सामाजिक तबके के हों।

1965 में डिक्री ऑफ प्रेज (प्रशस्ति पत्र) प्रदान कर पोप पॉल VI ने अपने धर्म संघ का विस्तार कर अन्य देशों में शाखाएं खोलने के मदर टेरेसा के अनुरोध को स्वीकार कर लिया। इसके बाद संघ का तेजी से विस्तार हुआ और विश्वभर में इसकी नई शाखाएं खुलीं। भारत के बाहर इस मिशन का पहला केन्द्र वेनेजुएला में स्थापित हुआ, जिसके बाद रोम और तंजानिया में इसके केन्द्र खुले और इसके बाद अल्बेनिया सहित एशिया, अफ्रीका और यूरोप के कई देशों में मिशनरीज ऑफ चैरिटी के इसी प्रकार के केन्द्र बनाए गए।

1997 में मदर टेरेसा के देहांत के बाद सेंट जॉन पॉल II ने 5 वर्ष की प्रतीक्षा अवधि के सामान्य तौर पर लागू होने वाले नियम को न मानते हुए उन्हें संत घोषित किए जाने की प्रक्रिया प्रारंभ करने की घोषणा की। वर्ष 2003 में उन्हें धन्य (बीऐटीफाई) घोषित किया गया।

नियमानुसार, किसी दिवंगत रोमन कैथोलिक को पवित्रात्मा (ब्लेस्ड) घोषित किए जाने से पूर्व उससे संबंधित एक चिकित्सा चमत्कार का होना आवश्यक है और यह घोषणा किए जाने के बाद इसी प्रकार के एक अन्य चमत्कार की आवश्यकता होती है, ताकि उन्हें संत की उपाधि प्रदान की जा सके।

मदर टेरेसा, अब रोमन कैथोलिक चर्च की संत बन जाएंगी। उनके संत बनने की यह प्रक्रिया पोप जॉन पॉल II द्वारा 2003 में उन्हें बीऐटीफाई किए जाने से शुरू हुई। वर्ष 2002 में वैटिकन ने उस पहले चमत्कार को औपचारिक रूप से मान्यता प्रदान की, जिसके बारे में कहा जाता है कि मदर टेरेसा ने अपने देहांत के बाद किया। 20 दिसम्बर, 2015 को पोप फ्रांसिस ने ब्राजील में हुए एक अन्य चमत्कार का श्रेय मदर टेरेसा को दिया। इस संबंध में मिशनरीज ऑफ चैरिटी द्वारा जारी सूचना-विवरणिका के अनुसार मस्तिष्क के एक लाइलाज बैक्टीरिया संक्रमण से पीड़ित एक व्यक्ति 9 दिसम्बर, 2008 को उस समय पूर्ण रूप से स्वस्थ हो गया, जब उसकी पत्नी ने एक पैरिश चर्च में मदर टेरेसा से प्रार्थना की।

मदर टेरेसा के कार्यों का मान विश्वभर में हुआ और उन्हें अनेक पुरस्कार तथा अलंकरण प्रदान किए गए। इनमें पोप जॉन XXIII शांति पुरस्कार (1971) और अंतर्राष्ट्रीय शांति व सद्भाव को प्रोत्साहित करने के लिए प्रदान किया जाने वाला नेहरू पुरस्कार (1972) शामिल है। इसके अतिरिक्त उन्हें बाल्जान पुरस्कार (1979), टेम्पलटन तथा मैगसेसे पुरस्कार भी प्राप्त हुए। उनके मानवीय कार्यों के महत्व को रेखांकित करते हुए मदर टेरेसा को 1979 में नोबल शांति पुरस्कार प्रदान किया गया।

संयोग से, मदर टेरेसा को संत की उपाधि उसी समय प्रदान की जा रही है, जब दयालुता से जुड़े कार्यकर्ताओं तथा मंत्रीगण हेतु दयाभाव तीर्थाटन वर्ष के आयोजन का समापन हो रहा है। मदर टेरेसा को संत उद्घोषित कर, चर्च अर्थात् ईसाई धर्म संघ, उन्हें उन सभी लोगों के लिए ऐसे प्रेरणा स्रोत के रूप में प्रस्तुत कर रहा है, जो उन्हीं की भांति "विश्वभर में प्रेम और शांति की जोत जलाने की उत्कृष्ट भावना से जीते हैं, ठीक वही भावना, जिससे मदर टेरेसा गरीबों, बीमार और बेसहारा लोगों की अथक सेवा करती रही और उनके जीवन को अपनी मुस्कान और अपने सरल व्यवहार की नर्म अनुभूति से भरती रहीं और प्रार्थना एवं ईश्वर पर अटूट विश्वास के बल पर पूरे समर्पण भाव से अपनी चुनी राह पर चलती रहीं।"

डाक विभाग, सेंट टेरेसा को संत की उपाधि प्रदान किए जाने के उपलक्ष्य में स्मारक डाक-टिकट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है।

आभार:-

मूलपाठ	:	इंटरनेट पर उपलब्ध सूचना पर आधारित
डाक टिकट / स्मारिका शीट / प्रथम दिवस आवरण / विरूपण	:	श्रीमति अलका शर्मा

भारतीय डाक
India Post

तकनीकी आंकड़े
TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग	:	5000 पैसा
Denomination	:	5000 p
मुद्रित स्मारिका शीट	:	4.0 लाख
Souvenir Sheet Printed	:	0.4 million
मुद्रण प्रक्रिया	:	वेट ऑफसेट
Printing Process	:	Wet Offset
मुद्रक	:	प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	:	Security Printing Press, Hyderabad

The above philatelic items are available for sale at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक-टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the stamp, first day cover and information brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 5.00

Saint Teresa

Mother Teresa was an icon of God's tender mercy, radiating the light of God's love to so many through her works of mercy, both spiritual and material.

Born Agnes Gonxha Bojaxhiu in 1910 to an ethnic Albanian family in Skopje, in what is now part of Macedonia, Mother Teresa came to India as a Sister of Loreto in 1929. On her arrival in India, she began working as a teacher. On 24 May 1937, Sister Teresa made her Final Profession of Vows, becoming, as she said, the “spouse of Jesus” for “all eternity.” From that time on she was called Mother Teresa. She continued teaching at St. Mary's and in 1944 became the school's principal. A person of profound prayer and deep love for her religious sisters and her students, Mother Teresa's twenty years in Loreto were filled with profound happiness. Noted for her charity, unselfishness and courage, her capacity for hard work and a natural talent for organization, she lived out her consecration to Jesus, in the midst of her companions, with fidelity and joy.

However, the widespread poverty around her made a deep impression on her; and this led to her starting a new order called “The Missionaries of Charity”. The primary objective of this mission was to look after people, who nobody else was prepared to look after. Receiving what she described as a “call within a call,” she began her missionary work with the poor and laid the foundation for what would become the Missionaries of Charity.

The Missionaries of Charity, a Roman Catholic (Latin Church) religious congregation was established in 1950 by Mother Teresa. In 2012 it consisted of over 4,500 religious sisters. A member of the congregation must adhere to the vows of chastity, poverty, obedience, and the fourth vow, to give "wholehearted free service to the poorest of the poor." Today, the order consists of both contemplative and active branches in several countries. Missionaries care for those in need of care and assistance. They have schools run by volunteers to educate street children and run soup kitchens as well as other services as are required by the community. They have 19 homes in Kolkata (Calcutta) itself and services are provided, without charge, to people regardless of their religion or social status.

In 1965, by granting a Decree of Praise, Pope Paul VI granted Mother Teresa's request to expand her congregation to other countries. The Congregation grew rapidly, with new homes opening all over the globe. The congregation's first house outside India was in Venezuela, and others followed in Rome and Tanzania, and eventually in many countries in Asia, Africa, and Europe, including Albania.

Following her death in 1997, St John Paul II waived the usual five-year waiting period and allowed the opening of the process to declare her sainthood. She was beatified in 2003.

According to the norms, the Catholic Church requires one “medical” miracle before a deceased Catholic can be declared “blessed,” and another such miracle, occurring after that declaration, before he or she can be canonized as a saint.

Mother Teresa, who will now be a Saint of the Roman Catholic Church, was beatified by Pope John Paul II in 2003. This was the first step towards sainthood. In 2002, the Vatican officially recognised the first miracle she was said to have carried out after her death. On December 20, 2015, Pope Francis recognised a second miracle attributed to the Mother in Brazil, where, according to a write-up handed out by the Missionaries of Charity, a man with an incurable bacterial brain infection was cured on December 9, 2008 after his wife prayed to Mother Teresa in a parish church.

Mother Teresa's work has been recognised and acclaimed throughout the world and she received a number of awards and distinctions, including the Pope John XXIII Peace Prize (1971) and the Nehru Prize for her promotion of international peace and understanding (1972). She also received the Balzan Prize (1979) and the Templeton and Magsaysay awards. Mother Teresa was awarded The Nobel Peace Prize for humanitarian work in 1979.

The date of Mother Teresa's canonization will coincide with the conclusion of the Year of Mercy pilgrimage for workers and ministers engaged in works of mercy. With the canonization of Mother Teresa, the Church presents her as an inspiration to those who like her, “long to light the fire of love and peace throughout the world”.She assisted the poor, the sick and the abandoned with tireless dedication, offering smiles and simple gestures, finding strength to persevere with her vocation through prayer and trust in God.”

Department of Posts is pleased to issue a commemorative postage stamp on Saint Teresa on the occasion of her Canonization.

Credits:-

Text	:	Based on information available on internet
Stamp / Souvenir Sheet / FDC/Cancellation Cachet	:	Ms. Alka Sharma

भारतीय डाक विभाग
Department of Posts
India



संत टेरेसा SAINT TERESA
संत उद्घोषण 04.09.2016 Canonization

विवरणिका
BROCHURE